रांची, २३ मार्च, २०१६

आज

डॉट्स अपनाए टीबी से मुक्ति पाये : रब्बानी

टीबी मुक्ति के लिए चलाये गये हस्ताक्षर अभियान में 25 हजार लोग जुड़े

विश्व टीबी सप्ताह के तहत सदर अस्पताल में चला जागरूकता अभियान

मेदिनीनगर। विश्व टीबी सप्ताह के तहत यहां सदर अस्पताल में समान्य मरीजों को टीबी से बचाव के लिए जागरूक किया गया। इस अवसर पर स्वर्णलता रंजन ने कहा कि आओं हाथ से हाथ मिलाऐं, समाज और देश को टीबी मुक्त बनायें। उन्होंने टीबी के लक्षण एवं बचाव के उपाय को बताते हुए कहा कि आपको दो सप्ताह या उससे अधिक समय तक खाँसी हो, आपको खास तौर.पर रात को बुखार आता हो, आपका वजन घट रहा हो और उसका कोई दूसरा कारण न हो, खाने को मन नहीं करता हो, आप किसी ऐसे व्यक्ति के निकट सम्पर्क में हो जिसे टीबी हो। साथ ही उन्होंनें सावधानी बताते हुए कहा कि खाँसी हो तो हमेशा मुँह को रूमाल से ढकें। टीबी के जीवाणु खाँसने और छिकने से अधिक फैलते है। इस अवसर पर मंच के सचिव एवं भारत देश समन्वय तंत्र क सदस्य मो0 हशमत रब्बानी ने कहा कि डॉट्स अपनाए टीबी से मुक्ति पाए। उन्होंनें कहा कि 2016 का टीबी नियंत्रण थीम 'सामुहिक प्रयास से टीबी मिटाना'। उन्होंनें कहा कि यह बीमारी निचलतम स्तर के रहने के साधन, एक स्थान पर ज्यादा लोग रहने, अच्छा पौष्टिक भोजन न करने, एचआईवी–एड्स तथा डायबिटिज जैसी बीमारियों के रहने से पकड़ती है। क्षय रोग का संक्रमण पीड़ित व्यक्ति के थूक में मौजूद जीवाणु से होता है। जब पीड़ित व्यक्ति कही खाँसता, छीकता या थूकता है तो उस थूक में मौजूद जीवाणु हवा में मिल जाते है और आस–पास के लोगों में क्षय रोग का फैलाव करते है। रोगी नियमित क्षय रोग कि दवा ले रहे है उनसे क्षय रोग के संक्रमण का खतरा बहुत कम होता है। उन्होंनें कहा कि हमारे आस–पास हवा में क्षय रोग के जीवाणु कई बार मौजूद होते है, परन्तु रोग प्रतिकार शक्ति अच्छी होने के कारण कुछ लोगों में इसका संक्रमण नहीं होता है। कुछ लोगों में यह जीवाणु निष्क्रिय रहते है और इस कारण न तो बीमारी होती है और न ही कोई लक्षण दिखाई देते है। जब ऐसे लोगों में किसी कारणवश रोग प्रतिकार शक्ति कमजोर हो जाती है, तब यह निष्क्रिय जीवाणु सक्रीय होकर क्षय रोग का फैलाव करते है। फेफड़ो के अलावा लसीका और रक्त दवारा यह जीवाणु शरीर के अन्य हिस्सों में भी क्षय रोग का फैलाव कर सकते है। क्षय रोग गाय, भैस, सूअर जैसे जानवरों में भी पाया जाता है। इसे बोविन क्षय रोग कहते है। अगर क्षय रोग से पीड़ित जानवर का मांस बिना अच्छी तरह पकाए खाया गया हो या फिर कीटाणु वाला दूध बिना अच्छी तरह उबाले पिया गया हो तो आपको क्षय रोग हो सकता है। कार्यक्रम में विजय कुमार वर्मा, कृष्ण मोहन शाही, उदय प्रसाद, शशांक कुमार, नाजीद अली आदि ने सहयोग किया। ग्रामीण समाज कल्याण विकास मंच द्वारा टीबी मुक्त झारखण्ड व टीबी मुक्त भारत एवं टीबी मुक्त विश्व के लिए 24 मार्च 2015 को प्रारंभ किया गया। हस्ताक्षर अभियान एक वर्ष चला, जिसमें अब तक 25000 से अधिक लोग इस अभियान से जुड़

सदर अस्पताल में मरीजों को जागरूक करते संस्था के लोग। छाया : ब्रजेश तिवारी

ईश्वर में हमारा विश्वास — सत्यमेव जयते

राष्ट्रीय नवीन मेल

डालटनगंज (मेदिनीनगर) व रांची से एक साथ प्रकाशित

बुधवार, २३ मार्च २०१६

राष्ट्रीय नवीन मेल

खांसी हो तो मुंह को हमेशा रूमाल से करें सुरक्षा : स्वर्णलता रंजन

संवाददाता

मेदिनीनगर। विश्व टीबी सप्ताह के तहत मंगलवार को स्थानीय सदर अस्पताल में सौमान्य मरीजों के बीच टीबी से बचाव के लिए जागरूकता फैलाई गई। इस मौके पर मरीजों क्रो स्वर्णलता रंजन ने जानकारी दी। उन्होंने कहा कि 'आओं हाथ से हाथ मिलाऐं, समाज और देश को टी0बी0 मुक्त बनायें'। टीबी के लक्षण एवं बचाव के उपाय को बताते हुए कहा कि आपको दो सप्ताह या उससे अधिक समय तक खाँसी हो, रात को बुखार आता हो, वजन घट रहा हो, खाने को मन नहीं करता हो तो शीघ्र ही अस्पतालों में जाकर जांच करवना चाहिए। समय पर ईलाज शुरू हो जाने से टीबी काबू पाया जा सकता है। अगर समय पर जागरूक होकर ईलाज नही कराया जाता है तो फिर यह छोटी से बीमारी जानलेवा भी हो सकता है। उन्होंने कि डाटस अपनाए टीबी से मुक्ति पाए। वर्ष २०१६ का टीबी नियंत्रण थीम सामुहिक प्रयास से समाप्त होगा। यह बीमारी निचले स्तर के रहने के साधन, एक स्थान पर अधिक लोग रहने, अच्छा पौष्टिक भोजन नही करने, एचआईवी तथा डायबिटिज जैसी बीमारियों के रहने से होती है। क्षय रोग का संक्रमण पीड़ित व्यक्ति के थूक में मौजूद जीवाणु से होता है। जब पीड़ित व्यक्ति कही खांसता-छींकता या थूकता है तो उस थूक में मौजूद जीवाणु हवा में मिल जाते है और आस-पास के लोगों में क्षय रोग को अपने चपेट में ले लेता है। जो भी रोगी नियमित दवा लेते है उनमे क्षय रोग के संक्रमण का खतरा कम होता है। मौके पर हशमत रब्बानी ने कहा कि हमारे आस-पास हवा में क्षय रोग के जीवाणु कई बार मौजूद होते है, परन्तु रोग प्रतिकार शक्ति अच्छी होने के कारण कुछ लोगों में इसका संक्रमण नहीं होता है। कुछ लोगों में यह जीवाणु निष्क्रिय रहते है और इस कारण न तो बीमारी होती है और न ही कोई लक्षण दिखाई देते है। जब ऐसे लोगों में किसी कारणवश रोग प्रतिकार शक्ति कमजोर हो जाती है, तब यह निष्क्रिय जीवाणु सक्रिय होकर क्षय रोग का फैलाव करते है। फेफड़ो के अलावा लसीका और रक्त द्वारा यह जीवाणु शरीर के अन्य हिस्सों में भी क्षय रोग का फैलाव करने में सक्षम होता है। क्षय रोग गाय, भैस, सूअर जैसे जानवरों में भी पाया जाता है। अगर क्षय रोग से पीड़ित जानवर का मांस बिना अच्छी तरह पकाए खाया गया हो या फिर कीटाणु वाला दूध बिना अच्छी तरह उबाले पिया गया हो तो आपको क्षय रोग हो सकता है। कार्यक्रम में विजय कुमार वर्मा, कृष्ण मोहन शाही, उदय प्रसाद, शशांक कुमार, नाजीद अली आदि भी मौजूद थे।

हशमत के हौसले से टीबी उड़न–छू

हशमत की हसरत ने पलामू से टीबी को खदेड़ा, तीन देशों में हशमत कर चुके हैं भारत का प्रतिनिधित्व

मुर्तजा • मेदिनीनगर

टीबी को देश में खामोश हत्यारा कहा जाता है। हर साल पांच लाख लोग इसके शिकंजे में आकर काल-कवलित हो रहे हैं। अकेले झारखंड में 34 हजार मामले हर साल सामने आ रहे हैं। पलामू ही नहीं, बल्कि राज्य व देश भर के कई लोग टीबी की चपेट में आकर बीमार या मौत के शिकार हो चुके हैं। यह सिलसिला बदस्तूर अब भी जारी है।

टीबी पर काफी हद तक दवाइयों और जागरूकता से नियंत्रण हुआ है, लेकिन सरकारी महकमा टीबी पर पूरी तरह काबू पाने में अब भी असमर्थ है। इसके पीछे कई कारण हैं।

पलामू जिले के पांडू प्रखंड के रहनेवाले हशमत रब्बानी ने जब इन स्थितियों को समझा तो उन्होंने इस तस्वीर को बदलने की ठानी और टीबी की रोकथाम के लिए काम शुरू कर दिया। वर्षों की मेहनत की बदौलत उन्होंने लगभग 12 हजार 182 टीबी मरीजों को चिन्हित कर टीबी उन्मूलन के स्वास्थ्य विभाग के अभियान 'डॉट्स' से जोड़ा। साथ ही 50 लाख से अधिक लोगों को टीबी के प्रति अपने समिति संसाधनों के माध्यम से जागरूक किया।

टीबी नियंत्रण के लिए उनका पहला प्रयास 1999 में शुरू हुआ था। 2013 से उन्होंने पूरी तरह इस काबू पाने की ठान ली। इसके लिए उन्होंने समाज कल्याण विकास मंच नाम की अपनी संस्था का सहारा लिया। टीबी रोकथाम के लिए उसी वर्ष 'टीबी रीच' कार्यक्रम के संचालन की जिम्मेदारी उनकी संस्था को मिली और उन्होंने 800 साहिया के सहारे टीबी से जंग छेड़ दी। इसके बाद से लगातार पलामू को टीबी से छुटकारा दिलाने के लिए उनका संघर्ष जारी है। उन्होंने बताया कि 2019 में भी काफी उम्मीदें हैं। हशमत इथोपिया, जॉर्जिया और फिलिपिंस में टीबी नियंत्रण की दिशा में प्रयास के लिए भारत का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। 1990 से शुरू हुए संघर्ष से अब तक के 27 वर्षों में उन्होंने डायन कुप्रथा नियंत्रण, मानसिक स्वास्थ्य, मलेरिया, एड्स नियंत्रक व टीबी उन्मूलन की दिशा में काम कर बेहतर परिणाम दिया।

राष्ट्रीय स्वयंसिद्ध सम्मान से हो चुके हैं सम्मानित

मेदिनीनगर : स्वास्थ्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के एवज में जिंदल स्टील एवं पावर लिमिटेड व जिंदल फाउंडेशन ने दिल्ली में ग्रामीण समाज कल्याण विकास मंच के अधिकारियों को राष्ट्रीय स्वयंसिद्ध सम्मान से सम्मानित किया। राष्ट्रीय अवार्ड 2017 सम्मान समारोह में संस्था का नेतृत्व अध्यक्ष पंकज कुमार श्रीवास्तव कर रहे थे। इस बीच केंद्रीय इस्पात मंत्री चौधरी विरेंद्र सिंह व जिंदल स्टील की चेयरपर्सन शालू जिंदल ने पंकज कुमार श्रीवास्तव व हशमत रब्बानी को सम्मानित किया। इस भव्य समारोह में देश भर से मंच के अलावा 12 व्यक्तियों व नौ संस्थाओं को स्वयंसिद्ध श्री के खिलाफ से नवाजा गया। सभी एक-एक लाख रूपए भी दिए गए थे।

हशमत रब्बानी।

स्वस्थ समाज

- 12000 टीबी मरीजों को किया चिह्नित, 50 लाख हुए जागरूक

टीबी मुक्त पलामू और टीबीमुक्त भारत का दिया नारा

मेदिनीनगर : टीबी के चंगुल से लोगों को बचाने के लिए जद्दोजहद कर रहे हशमत रब्बानी ने टीबी मुक्त पलामू और टीबी मुक्त भारत का नारा दिया है। उनकी दिली इच्छा है कि पूरा भारत टीबी फ्री हो जाए। इसके लिए उन्होंने हस्ताक्षर अभियान भी चलाया है। बताया जाता है कि अब तक 25 हजार से अधिक लोगों ने इसके समर्थन में अपना-अपना हस्ताक्षर किया है। उन्होंने बताया कि पोषाहार की कमी के कारण अधिकतर लोग टीबी के चपेट में आते हैं। उन्हें यदि पर्याप्त पोषाहार मिले तो टीबी से छुटकारा पाया जा सकता है।

टीबी की रोकथाम को ले सहभागिता जरूरी

कार्यक्रम

- **सदर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में हुआ जागरूकता कार्यक्रम**
- **2025 तक देश से यक्ष्मा नियंत्रण का लक्ष्य निर्धारित**

संवाद सहयोगी, मेदिनीनगर : टीबी की रोकथाम में आमजन की सहभागिता जरूरी। पूरे विश्व में प्रति वर्ष 90 लाख लोग टीबी के शिकार होते हैं। इसमें सरकारी और गैर सरकारी पहुंच महज 60 लाख तक ही हो पाती है। 30 लाख टीबी मरीज सुविधाओं से वंचित रह जाते हैं। यह टीबी प्रभावितों का 33 प्रतिशत है। उक्त बातें ग्रामीण समाज कल्याण विकास मंच के सचिव सह सीसीएम स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय भारत सरकार के सदस्य मो हशमत रब्बानी ने कही। वे सोमवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सदर में ग्रामीण समाज कल्याण विकास मंच के बैनरतले टीबी को लेकर आयोजित जागरूकता कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। इसमें बड़ी संख्या में साहिया शामिल हुईं। हशमत ने कहा कि देश में एक लाख आबादी पर करीब 217 टीबी रोगी होने की संभावना है। इसमें से 35 की मृत्यु हो जाती हैं। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने 2025 तक टीबी उन्मूलन का लक्ष्य रखा गया है। बावजूद टीबी की दिशा में पर्याप्त प्रयत्न नहीं दिखती है। टीबी के रोकथाम के लिए जनसहभागिता जरूरी है। सीसीएमके अल्टरनेट मेंबर स्वर्णलता रंजन ने कहा कि अब टीबी की दवा प्रति दिन खिलाई जाती है। उसे पूर्ण डोज खिलाने में टीबी मरीजों को मदद करें। नहीं तो एमडीआर होने की संभावना बढ़ेगी। साथ ही उन्होंने राज्य सरकार को सलाह दी कि यक्ष्मा नियत्रण में प्राइवेट पार्टनरशिप कि योजनाएं चलाए जाएं। मौके बीटीटीएम सीमा कुमारी, गीता देवी, अरुण कुमार आदि थे।

२३ मार्च २०२४

आज

ग्रामीण समाज कल्याण विकास मंच को मिला पैंतालिस हजार नगद पुरस्कार और एक एनजीओ डिजिटल अवार्ड

मेदिनीनगर। 1 एनजीओ.इन के द्वारा ग्रामीण समाज कल्याण विकास मंच और उसके टीम को ऑनलाइन गुगल प्लेटफॉर्म के माध्यम से 18 मार्च 2024 को डिजिटल अवार्ड 2024 से अलंकृत किया गया। 1एनजीओ. इन के द्वारा पूरे भारत से तीन लोगों को चयन किया गया। प्रथम आईआर डी विजयपुर को 65 हजार डिजिटल ट्रांसफर और ग्रामीण समाज कल्याण विकास मंच को द्वितीय प्रशस्ति पत्र एवं पैंतालिस हजार 45000 बैंक खाता में डिजिटल ट्रांसफर कर किया गया। यह पुरस्कार संस्था द्वारा जमीनी स्तर पर बदलाव करते हुए ग्रामीण समाज कल्याण विकास मंच के वेबसाइट पर अपडेट करने सहित डिजिटल प्लेटफार्म पर अपडेट करने के लिए दिया गया। ग्रामीण समाज कल्याण विकास मंच द्वारा पलामू जिले में शिक्त सदन के माध्यम से अब तक 210 केस में से 195 केस को सफलता पूर्वक समाधान किया। सिर्फ 2023 में 92 केस में से दर्जनों मानसिकरोगी,पीड़िता और भुक्तभोगी सहित 80 केस को सफलतापूर्वक संपन्न किया। पलामू जिले में पिछड़े अनुसूचित जन जाति के क्षेत्र में तीन केंद्रों के माध्यम से सैकड़ों कुपोषित बच्चों को अमूल दूध, पारलेजी बिस्कुट सहित उन्हें जूता, ड्रेस और राहत सामग्री दिए गए। इसी तरह लोहरदगा जिले में विशिष्ट दत्तक ग्रहण अभिकरण के माध्यम से कई बच्चों को सेवाएं दी जा रही है और गोद लेने वाले माता पिता, अभिभावक को सही रास्ता और कानूनी रास्ता चुनने का सलाह दे रहे हैं। फर्जी दत्तक ग्रहण संस्था, प्राइवेट हॉस्पिटल, फर्जी वेबसाइट, अवैध खरीद बिक्री पर रोक लगाने के लिए जागरूकता फैला रहे हैं। दर्जनों स्थानों पर बालिका फेंकें नहीं हमें देदें या संस्था के पालने सरकारी अस्पताल के पालने में छोड़ जाएं। विशिष्ट दत्तक ग्रहण की माताएं पालेंगी। ग्रामीण समाज कल्याण विकास मंच द्वारा देवघर कार्यालय के माध्यम से एचआईवी एड्स से बचाव के लिए हजारों एचआरजी, महिला यौन कर्मियों को विभिन्न सेवाएं दी जा रही हैं। एचआईवी एड्स अधिनियम 2017 के अंतर्गत एचआईवी एड्स के साथ जी रहे लोगों के अधिकारों की रक्षा सहित, रोजगार शिक्षा स्वास्थ्य, बीमा संपति और भेदभाव को रोकना शामिल है, इसके लिए संस्थान में शिकायत निवारण तंत्र स्थापित की गई है। ग्रामीण समाज कल्याण विकास मंच के प्रभारी सह कोषाध्यक्ष स्वर्ण लता रंजन ने गौरवान्वित होते हुए कहा कि संस्था अपने स्थापना काल से ही विषमताओं को जूझते हुए अपने संकल्प के प्रति असाधारण साहस,प्रतिबद्धता और समर्पण भावना के साथ संस्था के पदाधिकारियों और कर्मचारियों ने अद्वितीय पहचान बनाई है, ग्रामीण समाज कल्याण विकास मंच के सचिव मो. हशमत रब्बानी ने बताया कि अब तक संस्था समाज में उल्लेखनीय योग्यदान के लिए दर्जनों पुरस्कार मिल चुके हैं हमारी संस्था सरकार और विभाग के साथ मिलकर समाज के अंतिम व्यक्ति के लिएं काम करती है, 1एनजीओ द्वारा डिजिटल अवार्ड 2024 और पैंतालिस हजार रूपया हमारी जिम्मेदारियां और बढ़ाई है। 45000 संस्था के खाते में आया है यह पैसा महिला और बच्चों के हित के लिए उपयोग किया जाएगा। इससे पहले जिंदल स्टील और पॉवर लिमिटेड ने स्वास्थ्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने के लिए स्वयं सिद्धा सम्मान और एक लाख नगद पुरस्कार दिए गए थे। ज्ञात हो की ग्रामीण समाज कल्याण विकास मंच की स्थापना काल 1990 से ही शिक्षा स्वास्थ्य बाल कल्याण, महिला सशक्तिकरण कीदिशा में काम कर रही है। मंच के सचिव मो. हशमत रब्बानी द्वारा तीन देशों इथोपिया, जॉर्जिया और फिलिपींस में टीबी नियंत्रण की दिशा में प्रयास हेतु भारत का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। दर्जनों राज्यों का दौरा कर एड्स टीबी और मलेरिया नियंत्रण हेतु भारत सरकार को रिपोर्ट सौंपी है। इसके अच्छे संकल्पना को सरकार अपना रही है।